# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक भास्कर | 2-9-22 | 2 | 5-6 |

# गर्भवती महिलाओं के लिए एचएयू ने तैयार की शैक्षिक सामग्री, कॉपीराइट भी मिला

## छात्रा पूनम यादव ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में विकसित की शैक्षिक सामग्री

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर कॉपीराइट प्रदान किया गया है। इस सामग्री को जल्द मोबाइल एप पर भी महिलाएं और अन्य लोग देख सकेंगे। एक क्लिक पर ही महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान बरती जानें वाली सावधानियों के बारे में जानकारी मिल सकेगी। एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज बताया कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत सी गर्भवती महिलाओं को अपनी देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। इस अवसर पर विभाग की छात्रा पूनम यादव, डॉ. पूनम मलिक, डॉ. मंजु महता, डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार आदि मौजूद रहे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक जागरण | 2.9.22 | 5 | 1-5 |

# एचएयू की विशेष एप करेगी महिलाओं का मार्गदर्शन

जागरण संवाददाता, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर कापीराइट प्रदान किया गया है। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने दी। उन्होंने कहा आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं।

परिणामस्वरूप बहुत सी गर्भवती महिलाओं को अपनी देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल एप की ओर रूख करते हैं। मगर गर्भावस्था से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों की गर्भावस्था जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है। उन्होंने कहा गर्भावस्था में महिलाओं को देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी मां और बच्चे की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा पूनम यादव ने डा. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में गर्भावस्था के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय गर्भवती महिलाओं के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी।

कुलपति के साथ कापीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा पूनम यादव व अधिकारीगण। • पीआरओ

कुलपति ने इस शैक्षिक सामग्री के लिए इन शोधकर्ताओं की प्रशंसा की और इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय ऐसी कई तकनीकों पर काम कर रहा है जिन्हे बौद्धिक संपदा के रूप में स्थापित किया जा सकता है। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय अनुसंधान व अविष्कारों की सहायता से किसानों व आमजन के लाभ के लिए निरंतर प्रयासरत है।

### यह शैक्षिक सामग्री मोबाइल एप पर होगी उपलब्ध

मानव संसाधन प्रबंधक निदेशक डा. मंजु महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में गर्भावस्था के बारे में सामान्य ज्ञान, गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य देखभाल, प्रसव पूर्व विकास, मनोरंजन, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, कपड़े, प्रसव, प्रसवोत्तर देखभाल और गर्भावस्था के बारे में आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। उन्होंने बताया कि यह शैक्षिक सामग्री विकसित करने के लिए शोधकर्त्ताओं द्वारा सबसे पहले वर्तमान में जो प्रेगनेंसी ऐप प्ले स्टोर पर उपलब्ध है उनका मूल्यांकन किया गया और उसके बाद महिलाओं की जरूरतों का अध्ययन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अजीत समाचार | 2.9.22 | 5 | 3-6 |

# गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

हिसार, 1 सितम्बर (विरेंद्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर कॉपीराइट प्रदान किया गया है। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने दी। उन्होंने कहा आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप, बहुत सी गर्भवती महिलाओं को अपनी देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रूख करते हैं। परन्तु गर्भावस्था से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों की गर्भावस्था जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है। उन्होंने कहा गर्भावस्था में महिलाओं को देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी मां और बच्चे की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा पूनम यादव ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में गर्भावस्था के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय गर्भवती महिलाओं के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी। कुलपति ने इस शैक्षिक सामग्री के लिए इन शोधकर्ताओं की प्रशंसा की और इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय ऐसी कई तकनीकों पर काम कर रहा है जिन्हे बौद्धिक संपदा के रूप में स्थापित किया जा सकता है। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय अनुसंधान व अविष्कारों की सहायता से किसानों व आमजन के लाभ के लिए निरंतर प्रयासरत है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कॉपीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा पूनम यादव व अधिकारीगण।

**यह शैक्षिक सामग्री मोबाइल ऐप पर होगी उपलब्ध :**

मानव संसाधन प्रबंधक निदेशक डॉ. मंजु महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में गर्भावस्था के बारे में सामान्य ज्ञान, गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य देखभाल, प्रसव पूर्व विकास, मनोरंजन, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, कपड़े, प्रसव, प्रसवोत्तर देखभाल और गर्भावस्था के बारे में आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। उन्होंने बताया कि यह शैक्षिक सामग्री विकसित करने के लिए शोधकर्ताओं द्वारा सबसे पहले वर्तमान में जो प्रेगनेंसी ऐप प्ले स्टोर पर उपलब्ध है उनका मूल्यांकन किया गया और उसके बाद महिलाओं की जरूरतों का अध्ययन किया गया। इस सामग्री को संबंधित क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों ने मूल्यांकन द्वारा प्रमाणित किया है। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार व एडवाइजर डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अमर उजाला | 2-9-22 | 4 | 5-6 |

## गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर एचएयू को मिला कॉपीराइट

एचएयू कुलपति प्रो. कांबोज के साथ कॉपीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा पूनम व अधिकारीगण। संवाद

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर कॉपीराइट प्रदान किया गया है। कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। गर्भवती महिलाओं को अपनी देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। जल्द ही इसे एप के जरिये भी उपलब्ध कराया जाएगा।

विश्वविद्यालय की छात्रा पूनम यादव ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में गर्भावस्था के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। यह सामग्री भारतीय गर्भवती महिलाओं के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी। मानव संसाधन प्रबंधक निदेशक डॉ. मंजु महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में गर्भावस्था के बारे में सामान्य ज्ञान, गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य देखभाल, प्रसव पूर्व विकास, मनोरंजन, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, कपड़े, प्रसव, प्रसवोत्तर देखभाल और गर्भावस्था के बारे में आम मिथक विषयों को सम्मिलित किया गया है। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार व डॉ. पूनम मलिक मौजूद रहे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हरि. भूमि | 2.9.22 | 10 | 2-6 |

## संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे: कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज

# हकृवि वैज्ञानिकों को गर्भवती महिलाओं को विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

**अनेक गर्भवती महिलाओं को देखभाल स्वयं करती है, ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट की ओर रूख करते है**

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कॉपीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा पूनम यादव व अधिकारी। फोटो: हरिभूमि

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर कॉपीराइट प्रदान किया गया है। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने दी। उन्होंने कहा आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप अनेक गर्भवती महिलाओं को अपनी देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रूख करते हैं। परन्तु गर्भावस्था से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में है और इन्हें पश्चिमी देशों की गर्भावस्था जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है। उन्होंने कहा गर्भावस्था में महिलाओं को देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी मां और बच्चे की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा पूनम यादव ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में गर्भावस्था के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय गर्भवती महिलाओं के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी। कुलपति ने इस शैक्षिक सामग्री के लिए इन शोधकर्ताओं की प्रशंसा की और इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय ऐसी कई तकनीकों पर काम कर रहा है जिन्हें बौद्धिक संपदा के रूप में स्थापित किया जा सकता है। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय अनुसंधान तथा अविष्कारों की सहायता से किसानों व आमजन के लाभ के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक सम्पदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार तथा एडवाइजर डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

### यह शैक्षिक सामग्री मोबाइल ऐप पर होगी उपलब्ध

मानव संसाधन प्रबंधक निदेशक डॉ. मंजू महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में गर्भावस्था के बारे में सामान्य ज्ञान, गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य देखभाल, प्रसव पूर्व विकास, मनोरंजन, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, कपड़े, प्रसव, प्रसवोत्तर देखभाल और गर्भावस्था के बारे में आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। उन्होंने बताया कि यह शैक्षिक सामग्री विकसित करने के लिए शोधकर्ताओं द्वारा सबसे पहले वाणिज्य में जो प्रेगनेंसी ऐप प्ले स्टोर पर उपलब्ध हैं उनका मूल्यांकन किया गया और उसके बाद महिलाओं की जरूरतों का अध्ययन किया गया। इस सामग्री को संबंधित क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों ने मूल्यांकन द्वारा प्रमाणित किया है। भविष्य में यह सामग्री एक मोबाइल ऐप के माध्यम से भारतीय गर्भवती महिलाओं को उपलब्ध करवाई जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पंजाब केसरी | 2-9-22 | 5 | 7-8 |


# गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

*कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कॉपीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा पूनम यादव व अधिकारीगण।*

हिसार, 1 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर कॉपीराइट प्रदान किया गया है। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने दी।

उन्होंने कहा आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत सी गर्भवती महिलाओं को अपनी देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा पूनम यादव ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में गर्भावस्था के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है।

इस अवसर पर मानव संसाधन प्रबंधक निदेशक डॉ. मंजु महता, डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विनोद कुमार व एडवाइजर डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| चिराग टाइम्स | 01.09.2022 | -- | -- |

## हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की गर्भवती महिलाओं के लिए शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

**चिराग टाइम्स न्यूज**

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर कॉपीराइट प्रदान किया गया है। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने दी। उन्होंने कहा आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत सी गर्भवती महिलाओं को अपनी देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रुख करते हैं। परन्तु गर्भावस्था से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों की गर्भावस्था जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है। उन्होंने कहा गर्भावस्था में महिलाओं को देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी मां और बच्चे की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा पूनम यादव ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में गर्भावस्था के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है।

कुलपति ने इस शैक्षिक सामग्री के लिए इन शोधकर्ताओं की प्रशंसा की और इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय ऐसी कई तकनीकों पर काम कर रहा है जिन्हें बौद्धिक संपदा के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

**यह शैक्षिक सामग्री मोबाइल ऐप पर होगी उपलब्ध :** मानव संसाधन प्रबंधक निदेशक डॉ. मंजु महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में गर्भावस्था के बारे में सामान्य ज्ञान, गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य देखभाल, प्रसव पूर्व विकास, मनोरंजन, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, कपड़े, प्रसव, प्रसवोत्तर देखभाल और गर्भावस्था के बारे में आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार व एडवाइजर डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| सिटी पल्स | 01.09.2022 | -- | -- |

# हकृवि वैज्ञानिकों द्वारा गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कॉपीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा पूनम यादव व अधिकारीगण

**सिटी पल्स न्यूज, हिसार।** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर कॉपीराइट प्रदान किया गया है।

कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने कहा गर्भावस्था में महिलाओं की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी मां और बच्चे की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा पूनम यादव ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में गर्भावस्था के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। यह सामग्री भारतीय गर्भवती महिलाओं के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी।

मानव संसाधन प्रबंधक निदेशक डॉ. मंजु महता ने बताया कि यह शैक्षिक सामग्री विकसित करने के लिए शोधकर्ताओं द्वारा सबसे पहले वर्तमान में जो प्रेगनेंसी ऐप प्ले स्टोर पर उपलब्ध हैं उनका मूल्यांकन किया गया और उसके बाद महिलाओं की जरूरतों का अध्ययन किया गया। इस सामग्री को संबंधित क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों ने मूल्यांकन द्वारा प्रमाणित किया है। भविष्य में यह सामग्री एक मोबाइल ऐप के माध्यम से भारतीय गर्भवती महिलाओं को उपलब्ध करवाई जाएगी।

इस अवसर पर डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विनोद कुमार व डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| समस्त हरियाणा | 01.09.2022 | -- | -- |


# हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर कॉपीराइट प्रदान किया गया है। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने दी। उन्होंने कहा आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत सी गर्भवती महिलाओं को अपनी देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रुख करते हैं। परन्तु गर्भावस्था से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों की गर्भावस्था जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है। उन्होंने कहा गर्भावस्था में महिलाओं को देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी मां और बच्चे की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा पूनम यादव ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में गर्भावस्था के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय गर्भवती महिलाओं के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी। कुलपति ने इस शैक्षिक सामग्री के लिए इन शोधकर्ताओं की प्रशंसा की और इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय ऐसी कई तकनीकों पर काम कर रहा है जिन्हें बौद्धिक संपदा के रूप में स्थापित किया जा सकता है। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय अनुसंधान व आविष्कारों की सहायता से किसानों व आमजन के लाभ के लिए निरंतर प्रयासरत है।

## यह शैक्षिक सामग्री मोबाइल ऐप पर होगी उपलब्ध

मानव संसाधन प्रबंधक निदेशक डॉ. मंजु महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में गर्भावस्था के बारे में सामान्य ज्ञान, गर्भावस्था के दौरान

स्वास्थ्य देखभाल, प्रसव पूर्व विकास, मनोरंजन, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, कपड़े, प्रसव, प्रसवोत्तर देखभाल और गर्भावस्था के बारे में आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। उन्होंने बताया कि यह शैक्षिक सामग्री विकसित करने के लिए शोधकर्ताओं द्वारा सबसे पहले वर्तमान में जो प्रेगनेंसी ऐप प्ले स्टोर पर उपलब्ध हैं उनका मूल्यांकन किया गया और उसके बाद महिलाओं की जरूरतों का अध्ययन किया गया। इस सामग्री को संबंधित क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों ने मूल्यांकन द्वारा प्रमाणित किया है। यह सामग्री एक मोबाइल ऐप के माध्यम से भारतीय गर्भवती महिलाओं को उपलब्ध करवाई जाएगी। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार व एडवाइजर डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| आज समाज | 02.09.2022 | -- | -- |

# कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को गर्भवती महिलाओं के लिए मिला शैक्षिक का कॉपीराइट

प्रवीन कुमार

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर कॉपीराइट प्रदान किया गया है। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने दी। उन्होंने कहा आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत सी गर्भवती महिलाओं को अपनी देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रुख करती हैं। परन्तु गर्भावस्था से संबंधित अधिकतर ऐप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों की गर्भावस्था जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है। उन्होंने कहा गर्भावस्था में महिलाओं की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी मां और बच्चे की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा पूनम यादव ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में गर्भावस्था के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय गर्भवती महिलाओं के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी।

कुलपति ने इस शैक्षिक सामग्री के लिए इन शोधकर्ताओं की प्रशंसा की और इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय ऐसी कई तकनीकों पर काम कर रहा है जिन्हें बौद्धिक संपदा के रूप में स्थापित किया जा सकता है। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय अनुसंधान व अविष्कारों की सहायता से किसानों व आमजन के लाभ के लिए निरंतर प्रयासरत है।

यह शैक्षिक सामग्री मोबाइल ऐप पर होगी उपलब्ध मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में गर्भावस्था के बारे में सामान्य ज्ञान, गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य देखभाल, प्रसव पूर्व विकास, मनोरंजन, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, कपड़े, प्रसव, प्रसवोत्तर देखभाल और गर्भावस्था के बारे में आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है।

कुलपति प्रो. बीआरकाम्बोज के साथ कॉपीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा पूनम यादव व अधिकारीगण। आज समाज

उन्होंने बताया कि यह शैक्षिक सामग्री विकसित करने के लिए शोधकर्ताओं द्वारा सबसे पहले वर्तमान में जो प्रेग्नेंसी ऐप प्ले स्टोर पर उपलब्ध हैं उनका मूल्यांकन किया गया और उसके बाद महिलाओं की जरूरतों का अध्ययन किया गया। इस सामग्री को संबंधित क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों ने मूल्यांकन द्वारा प्रमाणित किया है। भविष्य में यह सामग्री एक मोबाइल ऐप के माध्यम से भारतीय गर्भवती महिलाओं को उपलब्ध करवाई जाएगी।

इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार व एडवाइजर डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| भारत मंथन | 01.09.2022 | -- | -- |

# एचएयू वैज्ञानिकों को गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

■ (हि.स.)।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कॉपीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा पूनम यादव व अधिकारीगण।

**हिसार।** हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर कॉपीराइट प्रदान किया गया है। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने शुभकामना दी कहा कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत सी गर्भवती महिलाओं को अपनी देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रूख करती हैं परंतु गर्भावस्था से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों की गर्भावस्था जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है।

उन्होंने कहा गर्भावस्था में महिलाओं की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी मां और बच्चे की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा पूनम यादव ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में गर्भावस्था के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय गर्भवती महिलाओं के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी। मानव संसाधन प्रबंधक निदेशक डॉ. मंजु महता ने बताया कि इस शैक्षिक सामग्री में गर्भावस्था के बारे में सामान्य ज्ञान, गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य देखभाल, प्रसव पूर्व विकास, मनोरंजन, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, कपड़े, प्रसव, प्रसवोत्तर देखभाल और गर्भावस्था के बारे में आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। उन्होंने बताया कि यह शैक्षिक सामग्री विकसित करने के लिए शोधकर्ताओं द्वारा सबसे पहले वर्तमान में जो इंग्लिश ऐप प्ले स्टोर पर उपलब्ध है उनका मूल्यांकन किया गया और उसके बाद महिलाओं की जरूरतों का आकलन किया गया। इस सामग्री को संबंधित क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों ने मूल्यांकन द्वारा प्रमाणित किया है। भविष्य में यह सामग्री एक मोबाइल ऐप के माध्यम से भारतीय गर्भवती महिलाओं को उपलब्ध करवाई जाएगी। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार व एडवाइजर डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| The Tribune | 2-9.22 | 4 | 1-3 |

# Monitoring of pink bollworm in cotton must this month: Experts

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, SEPTEMBER 1

Stressing that this month was crucial for the cotton crop in view of the threat of pink bollworm attack, officials of the Agriculture Department and scientists have alerted the farmers and the field staff of the department to be vigilant and keep constant monitoring of the cotton fields.

Prof BR Kamboj said today that they held a meeting in this regard, which was attended by scientists of agriculture universities of Haryana, Punjab and Rajasthan and officials of the Haryana Agriculture Department.

Representatives of private seed companies in the HAU were also present on the occasion. Kamboj said agricultural scientists were constantly monitoring the problem of pink bollworm in the cotton crop in the northern region of the country.

He said all stakeholders would have to work together for the control of pink bollworm in the cotton crop. He said the wide spread of pink bollworm on cotton in Haryana and adjoining states, including Punjab and Rajasthan, was a matter of concern, which could be controlled with collective efforts. Last year, the outbreak was observed in 14 cotton-producing districts of Haryana.

Reports of pink bollworm incidence on Bt cotton are available in Bathinda and Mansa districts of Punjab and Hanumangarh and Sri Ganganagar districts of Rajasthan. Besides, nutrient deficiency has started in the cotton crop grown in sandy soil from this month. Farmers should meet the nutritional deficiencies as per their requirement," Kamboj stated.

Prof Kamboj said there was a need to reach out to the farmers with timely advisory for cotton crop in the northern states.

"The next month is very important for cotton. At this time, along with the monitoring of the pink bollworm, there will be a great need to pay attention to the use of nutrients," he said, adding that they would have to work collectively for the effective management of pink larva, white fly infestation and cotton leaf twist virus disease in the crop.

Pink bollworm attack on cotton flower. TRIBUNE PHOTO

**COLLECTIVE EFFORT REQUIRED**

"All stakeholders will have to work together for the control of pink bollworm in the cotton crop. The wide spread of pink bollworm on cotton in Haryana and adjoining states is a matter of concern. An agri expert